विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
ऊपरी कथा	...	१-२६
सागल नगर का वर्णन	...	१
ग्रन्थ के छः भाग	...	२
पहला परिच्छेद	...	४-२९
पूर्व योग		
१—उनके पूर्वजन्म की कथा	...	४
२—पूरण कस्सप के साथ राजा मिलिन्द की भेंट	...	६
३—मक्खलि गोसाल के साथ राजा मिलिन्द की भेंट	...	७
४—आयुष्मान् अस्सगुत्त का भिक्षु-संघ को बुलाना	...	८
५—महासेन देवपुत्र से मनुष्य लोक में आने की याचना	...	८
६—अस्सगुत्त का रोहण को दण्ड-कर्म देना	...	१०
७—नागसेन का जन्म	...	१३
८—नागसेन से आयुष्मान रोहण की भेंट	...	१४
९—नागसेन की प्रव्रज्या	...	१५
१०—नागसेन का अपराध और उसके लिए दण्ड-कर्म	...	१७
११—महा उपासिका को नागसेन का उपदेश देना	...	१९
१२—नागसेन का पाटलिपुत्र जाना	...	२१
१३—नागसेन का अर्हत्-पद पाना	...	२२
१४—आयुष्मान आयुपाल से राजा मिलिन्द की भेंट	...	२३
१५—आयुष्मान् नागसेन से राजा मिलिन्द की पहली भेंट	...	२७

विषय		पृष्ठ
दूसरा परिच्छेद	...	३०-७९
लक्षण प्रश्न		
१—पुद्गल प्रश्न मीमांसा	...	३०
२—आयुविषयक प्रश्न	...	३४
३—पण्डित-वाद और राज-वाद	...	३५
४—अनन्तकाय का उपासक बनना	...	३७
५—प्रव्रज्या के विषय में प्रश्न	...	३९
६—जन्म और मृत्यु के विषय में प्रश्न	...	३९
७—विवेक और ज्ञान के विषय में प्रश्न	...	४०
८—पुण्य-धर्म क्या है ?	...	४१
(क) शील की पहचान	...	४१
(ख) श्रद्धा की पहचान	...	४२
(ग) वीर्य की पहचान	...	४४
(घ) स्मृति की पहचान	...	४५
(ङ) समाधि की पहचान	...	४६
(च) ज्ञान की पहचान	...	४७
(छ) सभी धर्मों का एक साथ एक काम	...	४८
पहला वर्ग समाप्त		
९—वस्तु के अस्तित्व का सिलसिला	...	४९
१०—पुनर्जन्म से मुक्त होने का ज्ञान	...	५१
११—ज्ञान तथा प्रज्ञा के स्वरूप और उद्देश	...	५२
१२—अर्हत् को क्या सुख दुःख होते हैं ?	...	५५

विषय	पृष्ठ
१३—वेदनाओं के विषय में	५६
१४—परिवर्तन में भी व्यक्तित्व का रहना	५७
१५—नागसेन के पुनर्जन्म के विषय में प्रश्न	६०
१६—नाम और रूप तथा उनका परस्पर आश्रित होना	६१
१७—काल के विषय में	६१
द्वितीय वर्ग समाप्त	
१८—तीनों काल का मूल अविद्या	६२
१९—काल के आरम्भ का पता नहीं	६३
२०—आरम्भ का पता	६४
२१—संस्कार की उत्पत्ति और उससे मुक्ति	६५
२२—वही चीजें पैदा होती हैं जिनकी स्थिति का प्रवाह पहले से चला आता है	६५
२३—हम लोगों के भीतर कोई आत्मा नहीं है	६८
२४—जहाँ जहाँ चक्षुविज्ञान होता है वहाँ वहाँ मनोविज्ञान	७१
२५—मनोविज्ञान के होने से वेदना भी होती है ...	७३
(क) स्पर्श की पहचान	७४
(ख) वेदना की पहचान	७४
(ग) संज्ञा की पहचान	७५
(घ) चेतना की पहचान	७५
(ङ) विज्ञान की पहचान	७६
(च) वितर्क की पहचान	७७
(छ) विचार की पहचान	७७
तीसरा वर्ग समाप्त	

विषय पृष्ठ

२६—स्पर्श आदि मिल जाने पर अलग अलग नहीं किया जा सकता ७७

नमकीन और भारीपन ७८

नागसेन और मिलिन्द राजा के महाप्रश्न समाप्त

तीसरा परिच्छेद ८०-११३

विमतिच्छेदन प्रश्न

१—पाँच आयतन दूसरे दूसरे कर्मों के फल से हुए हैं, एक के फल से नहीं ८०

२—कर्म की प्रधानता ८०

३—प्रयत्न करना चाहिये ८१

४—स्वाभाविक आग और नरक की आग ८३

५—पृथ्वी किस पर ठहरी है ८५

६—निरोध और निर्वाण ८५

७—कौन निर्वाण पायेंगे ८६

८—निर्वाण नहीं पाने वाले भी जान सकते हैं कि यह सुख है ८६

पहला वर्ग समाप्त

९—बुद्ध के होने में शंका ८७

१०—भगवान् अनुत्तर हैं ८७

११—बुद्ध के अनुत्तर होने को जानना ८८

१२—धर्म को जानना ८८

विषय	पृष्ठ
१३—बिना संक्रमण हुए पुनर्जन्म होता है	८८
१४—परमार्थ में कोई ज्ञाता नहीं है	८९
१५—पुनर्जन्म के विषय में	८९
१६—कर्म-फल के विषय में	९०
१७—जन्म लेने का ज्ञान होना	९१
१८—निर्वाण के बाद व्यक्तित्व का सर्वथा लोप हो जाता है	९१
दूसरा वर्ग समाप्त	
१९—हम लोगों का शरीर एक बड़ा फोड़ा है	९२
२०—भगवान् बुद्ध सर्वज्ञ थे	९३
२१—बुद्ध में महापुरुषों के ३२ लक्षण	९४
२२—भगवान् बुद्ध का ब्रह्मचर्य	९४
२३—बुद्ध की उपसम्पदा	९५
२४—गर्म और ठण्डे अश्रु	९६
२५—रागी और विरागी में भेद	९६
२६—प्रज्ञा कहाँ रहती है	९६
२७—संसार क्या है	९७
२८—स्मृति से स्मरण होता है	९७
२९—स्मृति की उत्पत्ति	९८
तीसरा वर्ग समाप्त	
३०—सोलह प्रकारों से स्मृति की उत्पत्ति	९८
३१—मृत्यु के समय बुद्ध के स्मरण करने मात्र से देवत्व-लाभ	१०१

विषय	पृष्ठ
३२—दुःख प्रहाण के लिये उद्योग	१०२
३३—ब्रह्मलोक यहाँ से कितनी दूर है	१०४
३४—मर कर दूसरी जगह उत्पन्न होने के लिए समय की आवश्यकता नहीं	१०४
३५—बोध्यङ्ग के विषय में	१०६
३६—पाप और पुण्य के विषय में	१०६
३७—जाने और अनजाने पाप करना	१०७
३८—इसी शरीर से देवलोकों में जाना	१०७
३६—लम्बी हड्डियाँ	१०८
४०—आस्वास-प्रस्वास का निरोध	१०८
४१—समुद्र क्यों नाम पड़ा ?	१०९
४२—सारे समुद्र का नमकीन होना	१०९
४३—सूक्ष्म धर्म	१०९
४४—विज्ञान, प्रज्ञा और जीव	११०

चौथा वर्ग समाप्त

मिलिन्द राजा के प्रश्नों का उत्तर देना समाप्त

चौथा परिच्छेद	११४-४०३
मेण्डक प्रश्न	
क. महावर्ग	
१—मेण्डक—आरम्भ कथा	११४
(क) धार्मिक मन्त्रणा करने के अयोग्य ८ स्थान	११६
(ख) धार्मिक विषयों पर मन्त्रणा करने के अयोग्य आठ व्यक्ति	११७

विषय		पृष्ठ
(ग)	गुप्त विषयों को खोल देने वाले नव प्रकार के व्यक्ति	११७
(घ)	बुद्धि पक जाने के आठ कारण	११८
(ङ)	शिष्य के प्रति आचार्य के पच्चीस कर्तव्य ...	११८
(च)	उपासक के दस गुण	१२०
२--बुद्धपूजा के विषय में		१२०
(१)	आग की उपमा	१२२
(२)	आँधी की उपमा	१२३
(३)	ढोल की उपमा...	१२४
(४)	महापृथ्वी की उपमा	१२५
(५)	पेट के कीड़ों की०	१२६
(६)	रोग की०	१२७
(७)	नन्दक यक्ष की०	१२७
३--क्या बुद्ध सर्वज्ञ थे ?		१२६
सात प्रकार के चित्त		
(१)	संक्लेश चित्त...	१३०
(२)	स्रोत आपन्न का चित्त...	१३०
(३)	सकृदागामी का चित्त	१३१
(४)	अनागामी का चित्त	१३२
(५)	अर्हत् का चित्त...	१३२
(६)	प्रत्येक-बुद्ध का चित्त	१३३
(७)	सम्यक् सम्बुद्ध का चित्त	१३४
४--देवदत्त की प्रव्रज्या के विषय में		१३७
५--बड़े भूकम्प होने के कारण		१४३

विषय	पृष्ठ
६—शिवि राजा का आँखों का दान कर देना	१४६
(१) चीन राजा	१५२
(२) बिन्दुमती गणिका का सत्य बल	१५२
७—गर्भाशय में जन्म ग्रहण करने के विषय मे	१५४
८—बुद्ध-धर्म का अन्तर्धान होना	१६३
९—बुद्ध की निष्कलङ्कता	१६७
१०—बुद्ध समाधि क्यों लगाते हैं ?	१७१
११—ऋद्धि बल की प्रशंसा	१७३

पहला वर्ग समाप्त

ख. योगिकथा

१२—छोटे-मोटे विनय के नियम संघ के द्वारा रद्द-बदल किये जा सकते हैं	१७६
१३—बिलकुल छोड़ देने लायक प्रश्न	१७८
१४—मृत्यु से भय	१८०
१५—मृत्यु के हाथों से बचना	१८६
परित्राण का प्रताप...	१८८
मोर-परित्त की कथा...	१८९
दानव की कथा	१८९
विद्याधर की कथा	१८९
परित्राण सफल होने के तीन कारण	१९०
१६—बुद्ध को पिण्ड नहीं मिला	१९१
राजा की भेंट	१९२
दान में चार प्रकार की बाधायें	१९३

विषय			पृष्ठ
बुद्ध की चार बातें रोकी नहीं जा सकतीं			१६५
१७—बिना जाने हुए पाप और पुण्य		...	१६६
१८—बुद्ध का भिक्षुओं के प्रति निरपेक्ष भाव होना			१६७
१६—बुद्ध के अनुगामियों का नहीं बहकाया जाना			१६८
दूसरा वर्ग समाप्त			
२०—उपासक को सदा किसी भी भिक्षु का आदर करना चाहिये	...	...	२००
श्रमण के गुण और चिन्ह		...	२०१
२१—बुद्ध सभी लोगों का हित करते हैं		...	२०३
दीयंड़ का सांप	...	...	२०४
फलयुक्त वृक्ष का हिलना		...	२०४
किसान का खेत जोतना		...	२०५
ईख का पेरना	...	...	२०५
अमृत का बांटना	...	...	२०६
२२—वस्त्र-गोपन दृष्टान्त	...	...	२०६
रोगी अपने रोग को अपने ही जानता है		...	२०७
भूत को वही देख सकता है जिसके ऊपर आता है			२०८
नन्द की कथा	...	...	२०६
चुल्ल पन्थक	...	...	२०६
मघोराज ब्राह्मण की कथा		...	२०६
२३—बुद्ध के कड़े शब्द	...	...	२१०
अपराधी पुरुष को दण्ड देना चाहिये		...	२११
कड़वी दवा	...	...	२१२

विषय				पृष्ठ
	गोमूत्र की तरह	...	...	२१२
२४ —	बोलता वृक्ष ...	...	...	२१३
	धान की गाड़ी	...	...	२१३
	मट्ठा महता हूँ	...	...	२१४
	फलानी चीज बना रहा हूँ		...	२१४
२५ —	बुद्ध का अन्तिम भोजन	...	...	२१४
२६ —	बुद्ध-पूजा भिक्षुओं के लिए नहीं है		...	२१७
२७ —	बुद्ध के पैर पर पत्थर की पपड़ी का गिर पड़ना		...	२१६
	चुल्लू का पानी	...	...	२२०
	मुट्ठी की धूल	...	...	२२०
	मुँह का कौर	...	...	२२०
२८ —	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ श्रमण	...	...	२२२
२९ —	गुण का प्रकाश करना	...	...	२२३
३० —	अहिंसा का निग्रह	...	...	२२४
३१ —	स्थविरों को निकाल देना	...	...	२२७
	पृथ्वी की उपमा	...	...	२२७
	समुद्र की उपमा	...	...	२२८
	तीसरा वर्ग समाप्त			
३२ —	मोग्गलान का मारा जाना	...	...	२२९
	बलशाली राजा	...	...	२३०
	अपराधी पुरुष	...	...	२३०
	जंगल की आग	...	...	२३०
३३ —	प्रातिमोक्ष के उपदेश भिक्षु लोग आपस में छिपा कर क्यों करते हैं ?	...	...	२३१

विषय	पृष्ठ
विनय पिटक छिपा कर रक्खे जाने के कारण ...	२३२
उस समय के सम्प्रदाय	२३२
चाण्डाल के घर में चन्दन	२३३
३४ — दो प्रकार के मिथ्या-भाषण	२३४
साधारण आदमी को थप्पड़ मारना ...	२३५
राजा को थप्पड़ मारना	२३५
३५ — बोधि-सत्व की धर्मता	२३६
३६ — आत्म-हत्या के विषय में	२३८
३७ — मैत्री-भावना के फल	२४२
गुण मनुष्य के नहीं मैत्री-भावना के हैं ...	२४४
कवच	२४४
जादू की जड़ी	२४४
पर्वत कन्दरा	२४५
६८ — पाप और पुण्य के विषय में	२४५
३९ — अमरा देवी के विषय में	२५१
४० — क्षीणाश्रव लोगों का अभय होना ...	२५३
४१ — सर्वज्ञता का अनुमान करना	२५६
पति की अपनी ही चीजों से ...	२५६
राजा की अपनी ही कंघी से ...	२५७
उपाध्याय के अपने ही पिण्डपात से ...	२५७
चौथा वर्ग समाप्त	
४२ — घर बनवाना	२५८
४३ — भोजन में सयम	२५९

विषय			पृष्ठ
४४—भगवान् का नीरोग होना	...	...	२६२
४५—अनुत्पन्न मार्ग को उत्पन्न करना		...	२६४
चक्रवर्ती राजा का मणि-रत्न		...	२६५
माता का बच्चा पैदा करना		...	२६५
खोई हुई वस्तु को निकालना		...	२६६
जंगल काट कर जमीन बनाना		...	२६६
४६—लोमस काश्यप के विषय में	...	...	२६६
४७—छद्दन्त और ज्योतिपाल के विषय में		...	२६६
४८—घटीकार के विषय में	...	...	२७२
४६—बुद्ध की जात	... ...	...	२७३
बुद्ध ब्राह्मण हैं	...	...	२७४
बुद्ध राजा हैं	...	...	२७५
५०—धर्मोपदेश करके भोजन करना नहीं चाहिये		...	२७७
लड़के को खिलौना	...	...	२७८
रोगी को तेल	... ...	...	२७८
दान कैसे मांगा जाता हैं ?	...	...	२७६
(क) करके बुरा माँगना	...	...	२७६
(ख) करके भला माँगना	...	...	२८०
(क) कहके बुरा माँगना	...	...	४८०
(ख) कहके भला मांगना	...	...	२८१
भगवान के भोजन में देवताओं का दिव्य ओज भर देना	... ...	...	२८२
५१—धर्मदेशना करने में बुद्ध का अनुत्सुक हो जाना		...	२८३
जैसे कोई धनुर्धर	...	...	२८३

विषय				पृष्ठ
जैसे कोई कुस्तीबाज	...	...		२८३
कोई वैद्य	...	...	...	२८४
कोई राजा	...	...	...	२८५
सभी बुद्धों की यही चाल रही है		...		२८५
जैसे राजा किसी पुरुष की खातिरदारी करे		...		२८६

पांचवां वर्ग समाप्त

५२—बुद्ध के कोई आचार्य नहीं	...	...		२८६
५३—संसार में एक साथ दो बुद्ध इकट्ठे नहीं हो सकते				२८६
नाव	...	...	...	२६०
दुबारा ठूंस कर खा ले	...	...		२६०
दो गाड़ी का भार एक ही पर		...		२६१
शिष्यों में झगड़ा होना	...	...		२६१
बुद्ध सब से अग्र	...	...		२६२
बड़ी चीज एक बार एक ही होती है		...		२६२
५४—महाप्रजापति गौतमी का वस्त्र दान करना		...		२६३
पिता अपने पुत्र की तारीफ करता है		...		२६४
माता पिता बच्चों को नहाते हैं		...		२६४
राजा की भेंट	...	...		२६५
५५—गृहस्थ रहना अच्छा है या भिक्षु बन जाना		...		२६६
५६—दुःखचर्या के दोष	...	...		२६८
जोर से दौड़े	...	...		३००
मैली धोती पहने	...	...		३००
५७—भिक्षु के चीवर छोड़ देने के विषय में		...		३००

विषय				पृष्ठ
तालाब की उपमा	...	...		३०१
वैद्य की उपमा	...	...		३०२
लङ्गर की उपमा	...	...		३०२
तालाब	...	...	...	३०३
वैद्य	...	...	...	३०४
सैकड़ों थाली भोजन		...	...	३०४
बेवकूफ आदमी गद्दी पर		...	...	३०५
कमल के दल पर पानी		...	...	३०६
महासमुद्र में मुर्दा		...	...	३०६
अजान आदमी का तीर चलाना			...	३०७
बड़ी लड़ाई	...	...	...	३०७
फूल की झाड़ी में कीड़े		...	...	३०८
करुम्भक पौधे	...	...	...	३०८
रत्न का रूखा भाग		...	...	३०९
चन्दन का सड़ा भाग		...	...	३०९
५८—अर्हत को शारीरिक और मानसिक वेदनायें			...	३१०
भूखा बैल	...	...	...	३११
वृक्ष के धड़ के समान योगी का चित्त			...	२११
५९—गृहस्थ का पाप	...	...	...	३१२
बीज को खेत में बोना और चट्टान पर बोना			...	३१२
लाठी हवा में नहीं टिकती	...		...	३१३
पानी पर आग नहीं जलती	...		...	३१३
बिना जाने विष को खा ले	...		...	३१४
बिना जाने आग पर चढ़ जाय			...	३१४

विषय			पृष्ठ
बिना जाने साँप काट ले	...	...	३१४
कलिङ्ग का राजा	...	...	३१५
६० — गृहस्थ और भिक्षु की दुःशीलता में अन्तर		...	३१५
६१ — जल में प्राण है क्या ?	...	...	३१७
क्या नगाड़े में भी जान है ?		...	३२०
बड़े बड़े जीवों का पानी पीना		...	३२०
छठा वर्ग समाप्त			
६२ — प्रपञ्च से छूटना	...	...	३२१
वृक्ष के ऊपर फलों का गुच्छा		...	३२२
चालाक आदमी	...	...	३२३
६३ — गृहस्थ का अर्हत् हो जाना	...	...	३२४
कमजोर पेट में भोजन	...	...	३२५
एक तिनके के ऊपर भारी पत्थर		...	३२५
बेवकूफ आदमी राजगद्दी पर...		...	३२५
६४ — अर्हत् के दोष	... ...	...	३२६
६५ — नास्ति-भाव	... ...	...	३२८
६६ — निर्वाण का निर्गुण होना	...	...	३२९
हिमालय को कोई बुला नहीं सकता		...	३३१
उस पार को इस पार नहीं लाया जा सकता	... ...	...	३३१
हवा की उपमा		...	६३२
६७ — उत्पत्ति के कारण	...	...	३३३
६८ — यक्षों के मुर्दे	...	...	३३४

विषय	पृष्ठ
६९—सारे शिक्षा-पद को भगवान् ने एक ही बार क्यों नहीं बना दिया ?	३३४
७०—सूरज की गरमी का घटना	३३५
७१—हेमन्त में ग्रीष्म की अपेक्षा सूरज की चमक अधिक क्यों रहती है ?	३३६
सातवाँ वर्ग समाप्त	
७२—वेस्सन्तर राजा का दान	३३७
रोगी को गाड़ी पर चढ़ा कर ले जाय ...	३३९
राजा का दान देना	३४०
अधिक से हानि	३४०
अधिक से लाभ	३४१
दान नहीं करने योग्य वस्तु... ...	३४२
७३—गौतम की दुःख-चर्या	३४९
७४—पाप और पुण्य में कौन बलवान् है और कौन कमजोर	३५६
कुमुद भण्डिका और शाली	३५८
७५—मरे हुये लोगों के नाम पर दान ...	३६०
लौटाया बायन	३६१
एक दरवाजे की कोठरी	३६१
नलके से पानी जाता है पत्थल नहीं ...	३६२
तेल से दीपक जलाया जाता है, पानी से नहीं ...	३६२
सोते वाला कुंवा	३६४
बालू की नदी के ऊपर थोड़ा पानी ...	३६४
७६—स्वप्न के विषय में	३६४

विषय				पृष्ठ
दर्पण	...	...	...	३६५
७० — काल-मृत्यु और अकाल-मृत्यु...			...	३६६
फल पकने पर और पहले भी गिर जाते हैं			...	३६६
सात अकाल-मृत्यु		...	...	३७०
मृत्यु के आठ कारण		...	...	३७०
काल-मृत्यु	...	...	...	३७१
आग की ढेरीं	...	...	...	३७२
भारी मेघ	...	...	...	३७३
सांप का विष	...	...	...	३७४
तीर का निशाना...		...	...	३७५
थाली की आवाज		...	...	३७६
धान की फसल ...		...	...	३७६
७८ — चैत्य की अलौकिकता		...	...	३७६
७६ — किसे ज्ञान होता है और किसे नहीं			...	३८०
किनको ज्ञान का साक्षात् नहीं होता			...	३८०
सुमेरु पर्वत को कोई उखाड़ नहीं सकता			...	३८२
महापृथ्वी	...	...	...	३८२
आग की चिनगारी		...	...	३८३
सालक जाति का कीड़ा		...	...	३८४
८० — निर्वाण की अवस्था		...	...	३८४
राजाओं को राज्य-सुख		...	...	३८६
कारीगरों को हुनर का आनन्द			...	३८७
८१ — निर्वाण का ऊपरी रूप			...	३८८
महासमुद्र	...	....	...	३८८
'अरूप, कायिक' नाम के देवता			...	३६०

विषय			पृष्ठ
निर्वाण क्या है इसका इशारा		...	३६१
कमल का एक गुण	...	...	३६१
पानी के दो गुण	...	...	३६१
दवा के तीन गुण	...	...	३६२
महा समुद्र के चार गुण	...	...	३६२
भोजन के पांच गुण	...	...	३६३
आकाश के दश गुण	...	...	३६३
मणि-रत्न के तीन गुण	...	...	३६४
लाल चन्दन के तीन गुण	...	...	३६४
मक्खन के मट्ठे के तीन गुण		...	३६५
पहाड़ की चोटी के पांच गुण		...	३६५
८२—निर्वाण की अवधि	...	...	३६६
आग से बाहर निकल आना...		...	३६७
गंदे गड्ढे से निकल आना	...	...	३६७
संकट के बाहर आना	...	...	३६८
कीचड़ के बाहर आ जाना	...	...	३६८
संसार मानों लोहे का लाल गोला है		...	३६६
संसार भय ही भय है	...	...	४००
भटका राह पकड़ लेता है	...	...	४००
८३—निर्वाण किस ओर और कहां है ?		...	४०१

आठवां वर्ग समाप्त

मेण्डक प्रश्न समाप्त

विषय पृष्ठ

पाँचवाँ परिच्छेद ४०४-४४५

अनुमान-प्रश्न

(क) बुद्ध का धर्म-नगर ४०४
शहर बसाने की उपमा ४०६
भगवान् का धर्म-नगर ४०७
फूल की दूकान ४०८
गन्ध की दूकान ४०६
फल की दूकान ४१०
बारहमासी आम ४१०
दवाई की दूकान ४१०
जड़ी-बूटी की दूकान ४११
अमृत की दूकान ४१२
रत्न की दूकान ४१२
(१) शील-रत्न ४१३
(२) समाधि-रत्न ४१३
(३) प्रज्ञा-रत्न ४१४
(४) विमुक्ति-रत्न ४१५
(५) विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन रत्न ४१६
(६) प्रति संविद रत्न ४१६
कोई लड़ाका सिपाही ४१६
(७) बोध्यंग रत्न ४१७
आम दूकान ४१८
धर्म-नगर के नागरिक ४१६
धर्म-नगर के पुरोहित ४२१

विषय			पृष्ठ
धर्म-नगर के हाकिम	....	....	४२१
धर्म-नगर के प्रकाश जलाने वाले		....	४२२
धर्म-नगर के चौकीदार	....	....	४२२
धर्म-नगर के रूप दक्ष	....	....	४२२
धर्म-नगर के माली	....	....	४२२
धर्म-नगर के फल बेचने वाले	....	....	४२२
धर्म-नगर के गंधी		....	४२३
धर्म-नगर के पियक्कड़ मतवाले	....	....	४२३
धर्म-नगर के पहरेदार	....	....	४२३
धर्म-नगर के वकील	....	....	४२४
धर्म-नगर के बड़े बड़े सेठ	....	....	४२४
धर्म-नगर के बैरिस्टर	....	....	४२४
(ख) धुताङ्ग की उपयोगिता के विषय में		....	४२७
धुताङ्ग पालन करने के २८ गुण		....	४३०
धुताङ्ग पालन करने के योग्य १० व्यक्ति		....	४३२
धनुर्धर की शिक्षा	....	...	४३३
वैद्य की शिक्षा	....	....	४३३
पापी के धुताङ्ग के बुरे फल	...	....	४३७
योग्य व्यक्ति के धुताङ्ग के अच्छे फल		...	४३६
स्थविर उपसेन का धुताङ्ग पालन		....	४४३
धुताङ्ग पालन करने वाले के ३० गुण		....	४४४

अनुमान प्रश्न समाप्त

विषय पृष्ठ

छठा परिच्छेद ४४६-५१४

उपमा-कथा-प्रश्न

(१) गदहे का एक गुण ४५०
(२) मुर्गे के पांच गुण ४५१
(३) गिलहरी का एक गुण ४५३
(४) मादे चीते का एक गुण ४५४
(५) नर चीते के दो गुण ४५४
(६) कछुये के पाँच गुण ४५६
(७) बाँस का एक गुण ४५७
(८) धनुष का एक गुण ४५८
(६) कौवे के दो गुण ४५८
(१०) बानर के दो गुण ४५६

पहला वर्ग समाप्त

(११) लौके का एक गुण ४६०
(१२) कमल के तीन गुण ४६१
(१३) बीज के दो गुण ४६१
(१४) शाल-वृक्ष का एक गुण ४६२
(१५) नाव के तीन गुण ४६३
(१६) लङ्गर के दो गुण ४६४
(१७) पतवार का एक गुण ४६४
(१८) कर्णधार के तीन गुण ४६५
(१६) केवट का एक गुण ४६६
(२०) समुद्र के पाँच गुण ४६७

दूसरा वर्ग समाप्त

विषय			पृष्ठ
(२१) पृथ्वी के पाँच गुण	....	....	४६६
(२२) पानी के पाँच गुण	....	....	४७०
(२३) आग के पाँच गुण	....	....	४७१
(२४) हवा के पाँच गुण	....	....	४७२
(२५) पहाड़ के पाँच गुण	....	....	४७३
(२६) आकाश के पांच गुण	....	....	४७५
(२७) चाँद के पाँच गुण	....	...	४७६
(२८) सूरज के सात गुण	....	....	४७७
(२६) इंद्र के तीन गुण	....	...	४७६
(३०) चक्रवर्ती राजा के चार गुण		....	४७६
तीसरा वर्ग समाप्त			
(३१) दीमक का एक गुण	....	....	४८१
(३२) बिल्ली के दो गुण	....	...	४८१
(३३) चूहे का एक गुण	....	....	४८२
(३४) बिच्छू का एक गुण	....	...	४८३
(३५) नेवले का एक गुण	...	....	४८३
(३६) बूढ़े सियार के दो गुण		....	४८४
(३७) हरिण के दो गुण	....	....	४८५
(३८) बैल के चार गुण	....	....	४८६
(३६) सुअर के दो गुण	....	...	४८७
(४०) हाथी के पाँच गुण	....	....	४८८
चौथा वर्ग समाप्त			

विषय			पृष्ठ
(४१) सिंह के सात गुण	....	....	४६०
(४२) चकवा के तीन गुण		....	४६१
(४३) पेणाहिका पक्षी के दो गुण		....	४६२
(४४) कबूतर का एक गुण		....	४६३
(४५) उल्लू के दो गुण	...	....	४६४
(४६) सारस पक्षी का एक गुण		....	४६४
(४७) बादुर के दो गुण	....	....	४६५
(४८) जोंक का एक गुण	....	....	४६६
(४९) सांप के तीन गुण	....	....	४६६
(५०) अजगर का एक गुण		....	४६७
पाँचवाँ वर्ग समाप्त			
(५१) मकड़े का एक गुण	....	....	४६८
(५२) दुधपीवा बच्चे का एक गुण		....	४९९
(५३) चित्रकधर कछुये का एक गुण		....	४९९
(५४) जङ्गल के पाँच गुण	....	....	५००
(५५) वृक्ष के तीन गुण	....	....	५०१
(५६) बादल के पाँच गुण	....	....	५०२
(५७) मणि-रत्न के तीन गुण		....	५०३
(५८) व्याधा के चार गुण		....	५०४
(५९) मछुये के दो गुण	....	....	५०४
(६०) बढ़ई के दो गुण	....	....	५०५
छठा वर्ग समाप्त			

विषय			पृष्ठ
(६१) घड़े का एक गुण	....	....	५०६
(६२) कलहंस के दो गुण	....	....	५०७
(६३) छत्र के तीन गुण	....	....	५०८
(६४) खेत के तीन गुण	....	....	५०८
(६५) दवा के दो गुण	....	....	५०६
(६६) भोजन के तीन गुण	....	....	५१०
(६७) तीरन्दाज के चार गुण	....	....	५१०
उपमा कथा प्रश्न समाप्त			
परिशिष्ट १—बोधनी	....	....	१—३५
परिशिष्ट २—नाम-अनुक्रमणी		...	३६—४६
परिशिष्ट ३—शब्द-अनुक्रमणी		....	५०—५५
परिशिष्ट ४—उपमा-सूची		....	५६—६१